भजन

तर्ज–किस तरह तोड़ा मेरा दिल..

आये हैं मेहरबां हमारे,लेके मेहरो के भण्डार
इक इक रूह पे बरस रहा है,प्यार उनका बेशुमार

1–चल के आये धाम से,रुहें जगाने के लिए
मैं उत आऊगां सतगुरू बन के,वादा निभाने के लिए
कब खड़ी हों रूहें उठ कर,कर रहे वो इन्तजार
आये हैं मेहरबां....

2–वास्ते रूहों के लाकर धाम से ,वाणी सौंप दी
सभी खजाने लुटा दिये, अपनी मोहब्बत सौप दी
खुद वो जाकर दर दर मांगे, रूहों से थोड़ा सा प्यार
आये हैं मेहरबां....

3–अपने गुनाहों से थे हम,तो बेखबर बैठे हुए
अर्श से आये जिमी पर, आवाजें हमको देते हुए
क्योंकि निसबत थी हमारी, उनको है हमसे प्यार
आये हैं मेहरबां....